NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

कृषि में महिलाओं पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव

आलोक सिंह तोमर, विवेक सिंह एवं विजय कुमार यादव

परिचय:

आज, जलवायु परिवर्तन सबसे गंभीर खतरों और चुनौतियों में से एक है जिसका दुनिया सामना कर रही है और यह बढ़ते तापमान, बढ़ते सूखे, बाढ़, चक्रवात, बर्फ के पिघलने, समुद्र के स्तर में वृद्धि, वर्षा और बर्फबारी के बदलते पैटर्न आदि के रूप में प्रकट होता है। दुनिया भर में हो सकता है कि अध्ययनों ने जलवायु परिवर्तन के प्रभाव में लिंग भेद दिखाया हो; पुरुषों और महिलाओं द्वारा उपयोग की जाने वाली अनुकूलन और शमन रणनीतियाँ। भारतीय सामाजिक-आर्थिक और पारंपरिक व्यवस्थाएं दुनिया के बाकी हिस्सों से अलग हैं। भूमि, वित्तीय संसाधनों, स्वास्थ्य, शिक्षा और विस्तार सेवाओं तक महिलाओं की पहुंच कम है। परिवार की पितृसत्तात्मक प्रकृति के कारण, घर और खेती में निर्णय लेने में उनकी भागीदारी कम होती है। जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को इन सभी सामाजिक परिस्थितियों से अलग नहीं किया जा सकता है।

कृषि में महिलाओं पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को समझने की आवश्यकता

भारत में सभी आर्थिक रूप से सक्रिय महिलाओं में से लगभग 84 प्रतिशत मुख्य रूप से कृषि और संबद्ध गतिविधियों में संलग्न हैं। इसके अलावा, लगभग 60 प्रतिशत कृषि कार्य केवल जुताई को छोड़कर महिलाओं द्वारा किए जाते हैं। महिलाएं अपनी आजीविका कमाने के लिए प्राकृतिक संसाधनों जैसे मिट्टी, पानी, जंगल आदि पर निर्भर हैं। इन प्राकृतिक संसाधनों पर जलवायु परिवर्तन का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है, जो अंततः उन पर निर्भर लोगों को प्रभावित करता है। जलवायु परिवर्तन न केवल खेती में बल्कि अन्य पहलुओं जैसे प्रवास, सामाजिक शोषण, कठिन परिश्रम, तनाव आदि में भी महिलाओं को प्रभावित करता है।

किए गए अध्ययन का अवलोकन

- आईसीएआर-राष्ट्रीय कृषि अर्थशास्त्र और नीति संस्थान द्वारा निम्नलिखित उद्देश्यों के साथ एक अध्ययन किया गया था।

- कृषि और संबद्ध क्षेत्रों में प्रभाव और जलवायु परिवर्तन के प्रति संवेदनशीलता में लिंग अंतर का अध्ययन करना।
- कृषि में जलवायु परिवर्तन के प्रभाव से निपटने के लिए लिंग विभेद अनुकूली रणनीतियों की पहचान करना।
- जलवायु परिवर्तन पर नीतियों और कार्यक्रमों का मूल्यांकन करना और कृषि महिलाओं के लिए उपयुक्त नीति विकल्प/हस्तक्षेप का सुझाव देना।
- भारत के तीन राज्यों में अध्ययन किया गया था। राजस्थान, ओडिशा और हिमाचल प्रदेश जो विभिन्न कृषि जलवायु परिस्थितियों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

अनुसन्धान का सारांश

अध्ययन के साथ-साथ साहित्य में भी यह पाया गया है कि जलवायु परिवर्तन से महिलाएं अलग तरह से प्रभावित होती हैं। पुरुषों और महिलाओं के लिए अलग-अलग भेद्यता सूचकांक की गणना करके लिंग अंतर भेद्यता का आकलन किया गया है।

राजस्थान

सुभेद्यता सूचकांक और उसके घटकों के परिणामों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि राजस्थान में, उच्च तापमान, सूखे जैसी स्थिति के लिए पुरुषों और महिलाओं दोनों का जोखिम समान था। बाड़मेर और टोंक दोनों जिलों में महिलाओं के लिए संवेदनशीलता सूचकांक अधिक था जिससे कि वे इन जलवायु खतरों के प्रति अधिक संवेदनशील हैं। शमन रणनीतियों में, अधिकांश पुरुष सदस्य रोजगार के लिए दूसरे शहरों में चले गए, सूचना और भौतिक संसाधनों तक कम पहुंच, पानी लाने में बाधाएं आदि महत्वपूर्ण कारक पाए गए जिन्होंने महिलाओं की संवेदनशीलता में वृद्धि करने में योगदान दिया। अब तक, साक्षरता के निम्न स्तर, ग्रामीण परिवेश में ऋण की कम पहुंच, शौचालय सुविधाओं की कमी (या उपयोग नहीं) और अनुचित पौष्टिक आहार के कारण पुरुषों की तुलना में महिलाओं की अनुकूलन क्षमता कम थी। यह कहा जा सकता है कि स्वस्थ तरीके से जलवायु परिवर्तन का संभावित प्रभाव (संवेदनशीलता और जोखिम जोड़ना) दोनों जिलों में पुरुषों की तुलना में महिलाओं पर अधिक था। इन सभी स्थितियों ने महिलाओं को पुरुषों की तुलना में थोड़ा

अधिक कमजोर बना दिया। यह आगे देखा गया है कि जलवायु परिवर्तन का प्रभाव मानव पूंजी, सामाजिक पूंजी, वित्तीय पूंजी और भौतिक पूंजी पर पुरुषों की तुलना में महिलाओं के लिए अधिक है। हालांकि, प्राकृतिक पूंजी पर प्रभाव पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए लगभग समान है।

जलवायु परिवर्तनशीलता का सामना करने के लिए विभिन्न रणनीतियों के संबंध में, यह देखा गया है कि राज्य के चयनित जिलों के उत्तरदाताओं ने जलवायु खतरों के दौरान कम रोजगार के अवसरों की अनुपस्थिति के कारण पुरुष सदस्यों के प्रवास की रणनीति अपनाई थी, जिससे जलवायु परिवर्तन होता है। लिंग भूमिकाएँ और गतिविधियाँ। उत्तरदाताओं द्वारा अपनाई गई कुछ अन्य रणनीतियाँ कृषि का विविधीकरण, अधिक उधार लेना, खेत पर अधिक काम करना, सूखा प्रतिरोधी और कम अवधि की फसलें लगाना, बाजार की मांग के अनुसार फसल/किस्मों का चयन, अंतरफसल और फसल रोटेशन आदि कुछ अन्य रणनीतियाँ थीं। शमन रणनीतियों में जलवायु परिवर्तन के दीर्घकालिक जोखिम और खतरों को खत्म करने या कम करने के लिए की गई कार्रवाई शामिल है। राजस्थान में, क्षेत्र में जल संरक्षण क्षेत्र में विभिन्न संरचनाओं/उपकरणों का उपयोग करके उत्तरदाताओं द्वारा उपयोग की जाने वाली सबसे आम शमन रणनीति थी। यहां तक कि कई कंपनियां अपने सीएसआर फंड का उपयोग पानी के संरक्षण और वर्षा जल के बहाव को रोकने के लिए संरचनाओं के निर्माण के लिए कर रही हैं।

हिमाचल प्रदेश

हिमाचल प्रदेश राज्य में, पुरुष और महिला दोनों समान रूप से बढ़ते तापमान, भूस्खलन और अनियमित हिमपात के संपर्क में थे; हालांकि एक्सपोजर इंडेक्स स्कोर राजस्थान और ओडिशा की तुलना में कम था। तदनुसार, महिलाओं की संवेदनशीलता अधिक पाई गई, लेकिन अन्य राज्यों की तुलना में अंतर नगण्य था। यह मुख्य रूप से निर्णय लेने में महिलाओं की अधिक भागीदारी और सूचना तक अधिक पहुंच के कारण है क्योंकि पुरुष सदस्य सभी कृषि गतिविधियों को महिलाओं के हाथों में छोड़कर गांव के बाहर नौकरी की तलाश करते हैं। हालांकि राज्य की महिलाओं की अनुकूलन क्षमता पुरुषों

की तुलना में थोड़ी कम थी, लेकिन यह राजस्थान और ओडिशा राज्यों की तुलना में बेहतर है। हिमाचल प्रदेश की महिलाओं की अधिक अनुकूली क्षमता के पीछे प्रमुख कारण अधिक शिक्षा स्तर, कृषि का विविधीकरण, शौचालय सुविधाओं की उपलब्धता और उपयोग आदि थे। इन कारकों का सही प्रतिनिधित्व हिमाचल प्रदेश में महिलाओं की अधिक अनुकूली क्षमता के रूप में हुआ। दो अन्य राज्यों की तुलना में; हालाँकि, यह पुरुष समकक्षों की तुलना में थोड़ा कम था। दोनों लिंगों पर जलवायु परिवर्तन के संभावित प्रभाव के लिए अनुरूप मामला भी सही था जब संवेदनशीलता और इसके संपर्क में जोड़ा गया। जैसा कि अध्ययन में बताया गया है कि SLA के सभी घटकों पर जलवायु परिवर्तन का महिलाओं पर अधिक प्रभाव पड़ता है। मानव पूंजी, प्राकृतिक पूंजी, सामाजिक पूंजी, वित्तीय पूंजी और भौतिक पूंजी हालांकि कुल्लू में वित्तीय पूंजी और मंडी जिले में भौतिक पूंजी में अंतर कम स्पष्ट पाया गया।

हिमाचल प्रदेश में, अन्य भागों में फसल का स्थानांतरण और परिणामी तापमान में वृद्धि की स्थिति में उपज में कमी देखी गई। इनके लिए किसानों ने विभिन्न प्रकार की फसलें लगाने, फसलों का चक्रण, अधिक उपज देने वाले बीजों का उपयोग और कीटों और रोगों को नियंत्रित करने के लिए स्वदेशी ज्ञान के उपयोग जैसी रणनीतियों को अपनाया था। हिमाचल प्रदेश में अपनाई गई सबसे आम शमन रणनीतियां वनीकरण, पशुओं के चारे की गुणवत्ता में सुधार, मिट्टी और पानी जैसे प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण थीं।

उड़ीसा

ओडिशा राज्य में, पुरुषों और महिलाओं दोनों को जलवायु परिवर्तन की दो अनियमितताओं यानी चक्रवात और बाढ़ का सामना करना पड़ा। हालांकि, केंद्रपाड़ा जिले में पुरुष और महिला जोखिम सूचकांक के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं था, लेकिन भद्रक जिले में महिलाओं को पुरुषों की तुलना में जलवायु परिवर्तन की घटनाओं से अधिक अवगत कराया गया था, जिसका श्रेय अधिक परिश्रम को जाता है। इन घटनाओं के कारण, पुरुष सदस्यों के प्रवास ने उन्हें क्षेत्र में अधिक काम करने के लिए मजबूर किया। बीमारी की लगातार घटनाओं, अधिक उधार, वाहन

स्टेशन तक पहुंचने के लिए लंबी दूरी, खाना पकाने के लिए वन आधारित ऊर्जा पर अधिक निर्भरता आदि ने पुरुषों की तुलना में भद्रक जिले में महिलाओं की संवेदनशीलता सूचकांक को अधिक बना दिया है।

अनुचित पौष्टिक आहार, जलवायु परिवर्तन की घटनाओं पर प्रशिक्षण संबंधी अनुकूलन तकनीकों की कमी, घर में शौचालय की सुविधा की कमी, जलवायु घटनाओं के दौरान स्थानीय सरकार से कम सहायता के कारण दोनों जिलों में महिलाओं की अनुकूल क्षमता पुरुषों की तुलना में काफी कम थी। जलवायु की घटनाओं के प्रति संवेदनशीलता और जोखिम को जोड़ते हुए पुरुषों की तुलना में महिलाओं पर संभावित प्रभाव अधिक था। इन सभी कारकों के कारण राज्य में महिलाओं की संवेदनशीलता पुरुषों की तुलना में काफी अधिक थी, महिलाओं की भेद्यता सबसे अधिक थी। एसएलए के सभी घटकों पर जलवायु परिवर्तन का दृश्य प्रभाव अर्थात। मानव पूंजी, प्राकृतिक पूंजी, सामाजिक पूंजी, वित्तीय पूंजी और भौतिक पूंजी पुरुषों की तुलना में महिलाओं पर अधिक थी, प्राकृतिक पूंजी को छोड़कर केंद्रपाड़ा के मामले में अंतर कम था। अनुकूली रणनीतियों के संबंध में, भोजन की आदतों में बदलाव, आय विविधीकरण, मेक द्वारा बाहर प्रवास, रियायती भोजन प्राप्त करना, विभिन्न प्रकार की फसलें लगाना, बाढ़ प्रतिरोधी फसलें, गहन भूमि प्रबंधन, भंडारण के पारंपरिक तरीकों आदि को कम करने के लिए उत्तरदाताओं द्वारा अपनाई गई रणनीतियाँ थीं। जलवायु खतरों का प्रभाव। जहां तक शमन का संबंध है, यह पाया गया है कि उत्तरदाताओं द्वारा पशुओं के चारे की गुणवत्ता में सुधार, जल संरक्षण, पोषक तत्व प्रबंधन आदि शमन रणनीतियों को अपनाया गया था।चल रहे कई कार्यक्रमों का असर महिलाओं की आजीविका पर पड़ रहा है। वे जलवायु अनिश्चितताओं के युग में महिलाओं के जीवन को आसान बनाने के लिए महत्वपूर्ण हैं। एक ओर, अधिकांश नीतियां महिलाओं की भूमिका को स्वीकार करने में विफल रहती हैं, हालांकि उनकी भूमिका का स्पष्ट रूप से सीमांकन किया गया है, दूसरी ओर उन्होंने ध्यान नहीं दिया है, हालांकि उनमें महिलाओं को सशक्त बनाने और लैंगिक

समानता को बढ़ावा देने की क्षमता है। इसलिए मौजूदा नीति में व्यापक बदलाव की जरूरत है ताकि उन्हें और अधिक जेंडर संवेदनशील और जेंडर फ्रेंडली बनाया जा सके।

निष्कर्ष

कार्यवाही अनुभाग में मूल्यांकन किए गए कई कार्यक्रमों का महिलाओं की आजीविक पर प्रभाव पर पड़ता है। वे बदलते जलवायु के युग में महिलाओं के जीवन को आसान बनाने के लिए महत्वपूर्ण हैं अनिश्चितताएं एक ओर, अधिकांश नीतियां महिलाओं की भूमिका को स्वीकार करने में विफल रहती हैं हालांकि उनकी भूमिका का स्पष्ट रूप से सीमांकन किया गया है, दूसरी ओर उन्होंने ध्यान नहीं दिया है महिलाओं को सशक्त बनाने और लैंगिक समानता को बढ़ावा देने की क्षमता है। इसलिए, व्यापक मौजूदा नीति में बदलाव की जरूरत है ताकि उन्हें अधिक जेंडर संवेदनशील और दोस्ताना जेंडर बनाया जा सके । किसानों के लिए राष्ट्रीय नीति (एनपीएफ) (2007) के प्रावधानों के अनुरूप, ग्रामीण विकास विभाग, ग्रामीण विकास मंत्रालय पहले से ही महिला किसानों के लिए विशेष रूप से महिला किसान सशक्तिकरण परियोजना (एमकेएसपी) नामक एक कार्यक्रम लागू कर रहा है, जो एक उप है। दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (डीएवाई-एनआरएलएम) के घटक। एमकेएसपी का प्राथमिक उद्देश्य कृषि में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ाकर उन्हें सशक्त बनाना और उनके लिए स्थायी आजीविका के अवसर पैदा करना है। ऐसी परियोजनाओं के लिए 60% (पूर्वोत्तर राज्यों के लिए 90%) तक की वित्तीय सहायता भारत सरकार द्वारा प्रदान की जाती है।

कृषि सहकारिता और किसान कल्याण विभाग भी अपनी लाभार्थी उन्मुख योजनाओं और कार्यक्रमों के तहत महिला किसानों के लिए 30% की राशि और लाभ के प्रवाह को सुनिश्चित करके कृषि में लिंग संबंधी चिंताओं को मुख्यधारा में लाने को बढ़ावा दे रहा है। इसके अलावा, सरकार कुछ चयनित योजनाओं के तहत पुरुष किसानों के अलावा महिला किसानों को अतिरिक्त सहायता और सहायता प्रदान कर रही है।

आलोक सिंह तोमर (मौसम प्रेक्षक) कृषि विज्ञान केंद्र, लखनऊ,
विवेक सिंह, प्राविधिक सहायक ग्रुप सी,कार्यालय (भूमि संरक्षण अधिकारी) गोंडा
विजय कुमार, यादव डा राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय अयोध्या